Learning Outcomes

मैथिली स्नातकोत्तर

सहित्य के अध्ययन से मानव समाज के सामाजिक, राजनैतिक, अर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का स्वतः ज्ञान होता है। वैसे साहित्य मात्र ज्ञान का ही माध्यम नही बल्कि अभिव्यक्ति का साधन भी है। विज्ञान, समाजिक विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी संकाय के विभिन्न विषयों के तथ्यों की समूचित अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम ये होती है। ज्ञानर्जन हेतु साहित्य सशक्त एवं अनिवार्य साधन है।

मैथिली समस्त मिथिलांचल की मतृभाषा है। इसकी अपनी लिपि (तिरहुत/मिथिलाक्षर) अपना व्याकरण व अपना एक अति प्राचीन समृद्ध साहित्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार आधुनिक भारतीय शिक्षा में मातृभाषा का अध्ययन अनिवार्य रखा गया है।

विश्वविद्यालय में मैथिली के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मैथिली साहित्यिक इतिहास, भाषा विज्ञान, काव्यशास्त्र मध्यकालीन काव्य, आधुनिक काव्य, गद्य एवं नाटक, मैथिली पत्र–पत्रिका, कथा उपन्यास, एवं नाटक का विकासक्रम प्रबंधकाव्य महाकाव्य निहित है। इस पाठयक्रम में अध्यनोपरांत छात्र निम्नलिखित कौशल में सक्षम होते हैं –

LO 1. मैथिली साहित्य के काल विभाजन को निर्धारित करने में।

LO 2. मैथिली साहित्य के आदिकाल में उपलब्ध सामग्री का विशलेषन करने में।

LO 3. मैथिली साहित्य के समृद्धि में मध्यकालीन नाटककार के योगदान को निरूपित करने में।

LO 4. मध्यकालीन कवियों के समय – निर्धारण में।

LO 5. विद्यापति की रचना एवं समाज पर इसके प्रभाव की व्याख्या करने में।

LO 6. विद्यापति के गीतों की लोगप्रियता का मूल्यांकन करने में

LO 7. अन्य भाषा साहित्य पर विद्यापति के लेखन प्रभाव को निरूपित करने मे।

LO 8. ब्रजबुली भाषा के विकास का विश्लेषण करने में।

LO 9. मध्यकालीन नाटक एवं काव्य की विशेषताओं की व्याख्या करनें में।

LO 10.कवीश्वर चन्दा झा के लेखन विशिष्टता को मूल्यांक्ति करने में।

LO 11.प्रख्यात विद्वानो के लेखन की समीक्षा करने में।

LO 12.मैथिली कहानी एवं उपन्यास में चित्रित निहित कथ्य एवं शिल्प के परिवर्तित स्वरूप का मूल्यांकन करने में।

LO 13.समकालीन साहित्यकार के माध्य हरिमोहन झा के लेखन विशिष्टता को मूल्यांकित करने में।

LO 14.आधुनिक मैथिली नाटक का विशलेषण करने में।

LO 15.मैथिली नाटक को मंचनीय बनाने में।

Professor & Head
University Deptt. of Maithili
L. N. Mithila University, Darbhanga

LO 16.काव्य के लक्षण, भेद, प्रयोजन, काव्य–गुण व दोष का विशलेषण करने में।

LO 17.काव्य में निहित रस, छनद, एवं अलंकार का मूल्यांकन करने में।

LO 18.मैथिली पत्रकारिता के स्वरूप, महत्व एवं इसके विकास को निरूपित करने में।

LO 19.मैथिली साहित्य के प्रमुख आलोचकों के लेखन शैली की व्याख्या करने में

LO 20.मैथिली साहित्य के आलोचना लेखन का अन्य साहित्य के आलोचना लेखन संग तुलनात्मक मूल्यांकन करने में।

LO 21.महाकाव्य एवं खण्डकाव्य के विषय वस्तु का विशलेषण एवं इसके रचनाकारों के प्रतिभा का मूल्याकन करने में।

LO 22.विश्व मे भाषायी परिवार में मैथिली के स्थान व इसकी महत्ता को निरूपित करने में।

LO 23.मैथिली भाषा के विभिन्न उपभाषाओं की व्याख्या करने मे।

LO 24.मैथिली भाषा का अन्य भाषा संग संबंध निरूपित करने में।

LO 25.मैथिलाक्षर में लिखित पाडुलिपियों को अन्य भाषा में अनुवादित करने में।

LO 26.मैथिली लोकगीत में वर्णित लोकजीवन को निरूपित करने में।

LO 27.मैथिली साहित्य का मैथिली सिनेमा में योगदान को निरूपित करने में।

LO 28.साहित्य के विभिन्न विधाओं के सृजनात्मक लेखन में।

भारत सरकार के प्रतिष्ठित संस्थान साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्ति के पश्चात छात्रों में इस भाषा के प्रति रूचि पहले के अपेक्षा अधिक वढ़ी है। मैथिली विषय का अध्ययन कर छात्र विभिन्न प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित कर रहें हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर अपने गाँव, समाज, देश के संग मैथिली भाषा एवं साहित्य का मान वढ़ा रहें है।

Professor & Head
University Deptt. of Maithili
L. N. Mithila University, Darbhanga